

बोधराज सीकरी : कांग्रेस को चिंतन और मंथन करना चाहिए



सेक्युलर बनाम कम्युनल की परिभाषा



बोध राज सीकरी

राहुल गांधी का यह कहना कि इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग सेक्युलर है, एक हास्यास्पद बयान है क्योंकि अगर यह संस्था सेक्युलर है तो विश्व में कोई भी संस्था कम्युनल नहीं है। जो संस्था जिन्ना की समर्थक है, जिस संस्था के कारण धर्म के आधार पर देश का विभाजन करवाया गया, जिस बंटवारे के कारण हज़ारों बहने विधवा हुईं, हज़ारों बच्चे अनाथ हुए, हज़ारों महिलाओं की इज्जत लूटी गई, हज़ारों हमारे बुजुर्ग मारे गए, हज़ारों लोग बेघर हुए, अगर वह संस्था सेक्युलर है तो कम्युनल कौन सी संस्था है।

हिंदुस्तान के टुकड़े होने का और पाकिस्तान का गठन होने का यदि कोई उत्तरदायी है तो यह संस्था ही है। दो वर्ष पूर्व हमारे प्रधान मंत्री ने विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस आयोजन करने का फ़ैसला लिया ताकि हमारे बुजुर्गों के ज़ख्मों पर मरहम लग सके परंतु राहुल गांधी के इस ग़ैर जिम्मेदाराना बयान ने हमारे ज़ख्मों को फिर से हरा कर दिया है। अफ़सोस इस बात का है कि इस संस्था ने कांग्रेस के साथ सौदेबाजी कर लाखों लोगों को दर-दर की टोकरी खाने पर मजबूर किया। यह वो पार्टी है जो तीन तलाक़ के फ़ैसले का पुरजोर विरोध करती है। फिर तो सिमी जैसी संस्था को भी राहुल गांधी को सेक्युलर घोषित करना चाहिए। यह लिखते हुए दर्द महसूस हो रहा है कि जिस पार्टी के जुलूस में पाकिस्तान के नारे लगाए जाते हैं, जिनके जुलूस में पाकिस्तान के झंडे को खुलेआम लहराया जाता है, ऐसी ऑर्गनाइजेशन को सेक्युलर ठहराया जा रहा है। यह अलगाववादियों का खेल नहीं तो क्या है। अचम्भा इस बात का है कि जब भी राहुल विदेश जाते हैं तो अचानक देश की मर्यादा को भूल जाते हैं। यह एक विडंबना है। सभी को मालूम ही होगा कि इस संस्था का कांग्रेस के साथ केरल में गठबंधन है जिसके कारण राहुल केरल से जीते थे और लगता है वो इस प्रकार की बयानबाजी करके अपना क़र्ज़ उतार रहे हैं। यू.पी.ए. की सरकार के दौरान एक बिल लाने का प्रयास किया गया था जिसके अनुसार अगर दंगे होंगे तो हिंदू दोषी माना जाएगा



और मुस्लिम विक्रिम माना जाएगा। अगर यह बिल लागू हो जाता तो दंगे होने के कारण हिंदू को जेल जाना पड़ता। शुक्र है कि वो बिल नहीं आया। यही कांग्रेस की असली मानसिकता है।

सर्वाधिक लोगों को मालूम है कि इस माह भारत के प्रधान मंत्री स्टेट विज़िट पर यू.एस.ए. जा रहे हैं। वहाँ की सरकार आँखें बिल्ला कर प्रतीक्षा कर रही है जो राहुल गांधी पचा नहीं पा रहे हैं। इस बार तो पी.एम. संयुक्त हाउस को भी सम्बोधित करेंगे। एक देश का प्रधान मंत्री मोदी जी के पाँव छूता है, दूसरे देश का प्रधान मंत्री उन्हें बॉस कहकर पुकारता है और यू.एस. प्रेसिडेंट उनका ऑटोग्राफ़ माँगता है। इन हालात में राहुल गांधी मोदी जी के पहुँचने से पहले उनकी निंदा करना, सरकारी संस्थाओं के खिलाफ़ बोलना, ताकि पूरे विश्व पर उसका असर पड़े परंतु दुर्भाग्य है राहुल गांधी का कि पूरा विश्व नमन करता है हमारे मोदी जी को। राहुल गांधी ने यू.एस. में प्रत्यक्ष रूप में और लंदन में परोक्ष रूप में अपना नकारात्मक एजेंडा चलाया परंतु सफल नहीं हुए ना होंगे। विडम्बना इस बात की है कि उनके अपनी विचारधारा वाले श्रीमान पित्रोदा जी कहते हैं कि देश के पी.एम. हर जगह सम्मान के हक़दार हैं। यह दो बातें एक दूसरे के विपरीत नहीं है क्या? कांग्रेस को मंथन और चिंतन करना चाहिए कि देश सर्वोपरि है या एक व्यक्ति विशेष का निजी स्वार्थ।

विडम्बना इस बात की भी है कि राहुल गांधी ने 2004 से 2023 तक 19 साल में कोई ऐसा काम नहीं किया जिसको वो अपनी उपलब्धि मानकर विदेश में प्रचार कर सके। उनके पास नकारात्मकता के सिवा कुछ नहीं है। व्यक्ति की दुकान में जो होता है वो व्यक्ति वही सामान बेचता है।





पुलिस अधाक्षक न साइबर अपराध पर बदलत रह ।

पाठ्यक्रम न पाखण क श्युका

कांग्रेस को मंथन और चिंतन करना चाहिए कि देश सर्वोपरि है या एक व्यक्ति विशेष का निजी स्वार्थ : बोधराज सीकरी

गुड़गांव, 5 जून (ब्यूरो): कांग्रेस को मंथन और चिंतन करना चाहिए कि देश सर्वोपरि है या एक व्यक्ति विशेष का निजी स्वार्थ।

उक्त बातें भाजपा के वरिष्ठ नेता बोधराज सीकरी ने कहीं। उन्होंने कहा कि राहुल गांधी का यह कहना कि 'डियन यूनिजन मुस्लिम लीग सेक्युलर है, एक हास्यास्पद बयान है क्योंकि अगर यह संस्था सेक्युलर है तो विश्व में कोई भी संस्था कम्यूनल नहीं है। जो संस्था जिन्ना की समर्थक है, जिस संस्था के कारण धर्म के आधार पर देश का विभाजन करवाया गया, जिस रैटवारे के कारण हज़ारों बहने विधवा हुई, हज़ारों बच्चे अनाथ हुए, हज़ारों महिलाओं की इज्जत लूटी गई,

हज़ारों हमारे बुजुर्ग मारे गए, हज़ारों लोग बेघर हुए, अगर वह संस्था सेक्युलर है तो कम्यूनल कौन सी संस्था है। हिंदुस्तान के टुकड़े होने का और पाकिस्तान का गठन होने का यदि कोई उत्तरदायी है तो यह संस्था ही है। दो

वर्ष पूर्व हमारे प्रधान मंत्री ने विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस आयोजन करने का फ़ैसला लिया ताकि हमारे बुजुर्गों के ज़ख्मों पर मरहम लग सके परंतु राहुल गांधी के इस ग़ैर ज़िम्मेदाराना बयान ने हमारे ज़ख्मों को फिर सेहरा कर दिया है। अफ़सोस इस बात का है कि इस संस्था ने कांग्रेस के साथ सौदेबाजी कर लाखों



बोधराज सीकरी

लोगों को दर-दर की ठोकरें खाने पर मजबूर किया। यह वो पार्टी है जो तीन तलाक़ के फ़ैसले का पुरजोर विरोध करती है। फिर तो सिमी जैसी संस्था को भी राहुल गांधी को सेक्युलर घोषित करना चाहिए। जिस पार्टी के जुलूस में

पाकिस्तान के नारे लगाए जाते हैं, जिनके जुलूस में पाकिस्तान के झंडे को खुलेआम लहराया जाता है, ऐसी ऑर्गनाइज़ेशन को सेक्युलर ठहराया जा रहा है। यह अलगाववादियों का खेल नहीं तो क्या है। अचम्भा इस बात का है कि जब भी राहुल विदेश जाते हैं तो अचानक देश की मर्यादा को भूल जाते हैं।

राष्ट्रीय सहारा

राष्ट्रीयता ■ कर्तव्य ■ समर्पण

राहुल गांधी का ब्यान हास्यास्पद : सीकरी

गुरुग्राम (एसएनबी)। हरियाणा सीएसआर ट्रस्ट के उपाध्यक्ष एवं पंजाबी विरादरी महासंगठन के प्रधान बोधराज सीकरी ने राहुल गांधी के उस कथन को हास्यास्पद बताया है, जिसमें उन्होंने कहा है कि इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग सेक्युलर है।

बोधराज सीकरी ने उनके कथन की निंदा करते हुए कहा कि जो संस्था जिन्ना की समर्थक है, जिस संस्था के कारण धर्म के आधार पर देश का विभाजन करवाया गया। जिस बंटवारे के कारण हजारों बहनें विधवा हुईं। बुजुर्ग मारे गए। लोग बेघर हुए। अगर वह संस्था सेक्युलर है तो कम्यूनल कौन सी संस्था है। उन्होंने कहा कि हिंदुस्तान के टुकड़े होने का और पाकिस्तान का गठन होने का यदि कोई उत्तरदायी है तो यह संस्था ही है। सीकरी ने कहा कि दो वर्ष पूर्व प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस आयोजन करने का निर्णय लिया, ताकि हमारे बुजुर्गों के जख्मों पर मरहम लग सके। राहुल गांधी के इस गैर जिम्मेदाराना बयान से हमारे जख्मों को फिर से हरा कर दिया है। उन्होंने कहा कि यह वह पार्टी है जो तीन तलाक के फैसले का पुरजोर विरोध करती है। फिर तो सिमी जैसी संस्था को भी राहुल गांधी को सेक्युलर घोषित करना चाहिए। सीकरी ने कहा कि यूपीए को सरकार के दौरान एक बिल लाने का प्रयास किया गया था, जिसके अनुसार अगर दंगे होंगे तो हिंदू दोषी माना जाएगा और मुस्लिम विक्रिम माना जाएगा। अगर यह बिल लागू हो जाता तो दंगे होने के कारण हिंदू को जेल जाना पड़ता। शुक्र है कि वो बिल नहीं आया। कांग्रेस की असली मानसिकता है।



सेक्युलर बनाम कम्यूनल की परिभाषा : बोध राज सीकरी

ह्यूमन इंडिया/ब्यूरो

गुरुग्राम। राहुल गांधी का यह कहना कि इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग सेक्युलर है, एक हास्यास्पद बयान है क्योंकि अगर यह संस्था सेक्युलर है तो विश्व में कोई भी संस्था कम्यूनल नहीं है। जो संस्था जिन्ना की समर्थक है, जिस संस्था के कारण धर्म के आधार पर देश का विभाजन करवाया गया, जिस बँटवारे के कारण हज़ारों बहने विधवा हुई, हज़ारों बच्चे अनाथ हुए, हज़ारों महिलाओं की इज्जत लूटी गई, हज़ारों हमारे बुजुर्ग मारे गए, हज़ारों लोग बेघर हुए, अगर वह संस्था सेक्युलर है तो कम्यूनल कौन सी संस्था है। हिंदुस्तान के टुकड़े होने का और पाकिस्तान का गठन होने का यदि कोई उत्तरदायी है तो यह संस्था ही है। दो वर्ष पूर्व हमारे प्रधान मंत्री ने विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस आयोजन करने का फैसला लिया ताकि हमारे बुजुर्गों के ज़ख्मों पर मरहम लग सके परंतु राहुल गांधी के इस गैर जिम्मेदाराना बयान ने हमारे ज़ख्मों को फिर से हराकर दिया है। अफ़सोस इस बात का है कि इस

● कांग्रेस को मंथन और चिंतन करना चाहिए कि देश सर्वोपरि है या एक व्यक्ति विशेष का निजी स्वार्थ : बोधराज सीकरी

संस्था ने कांग्रेस के साथ सौदेबाजी कर लाखों लोगों को दर-दर की ठोकरें खाने पर मजबूर किया। यह वो पार्टी है जो तीन तलाक़ के फ़ैसले का पुरजोर विरोध करती है। फिर तो सिमी जैसी संस्था को भी राहुल गांधी को सेक्युलर घोषित करना चाहिए। यह लिखते हुए दर्द महसूस हो रहा है कि जिस पार्टी के जुलूस में पाकिस्तान के नारे लगाए जाते हैं, जिनके जुलूस में पाकिस्तान के झंडे को खुलेआम लहराया जाता है, ऐसी ऑर्गनाइज़ेशन को सेक्युलर ठहराया जा रहा है। यह अलगाववादियों का खेल नहीं तो क्या है।

अचम्भा इस बात का है कि जब भी राहुल विदेश जाते हैं तो अचानक देश की मर्यादा को भूल जाते हैं। यह एक विडम्बना है। सभी को मालूम ही



होगा कि इस संस्था का कांग्रेस के साथ केरल में गठबंधन है जिसके कारण राहुल केरल से जीते थे और लगता है वो इस प्रकार की बयानबाजी करके अपना कर्ज़ा उतार रहे हैं। यू.पी.ए. की सरकार के दौरान एक बिल लाने का प्रयास किया गया था जिसके अनुसार अगर दंगे होंगे तो हिंदू दोषी माना जाएगा और मुस्लिम विक्रिम माना जाएगा। अगर यह बिल लागू हो जाता तो दंगे होने के कारण हिंदू को जेल जाना पड़ता। शुक्र है कि वो बिल नहीं आया। यही कांग्रेस की असली मानसिकता है।

सर्वाधिक लोगों को मालूम है कि इस माह भारत के प्रधान मंत्री स्टेट विजिट पर यू.एस.ए. जा रहे हैं। वहाँ की सरकार आँखे बिछा कर प्रतीक्षा कर रही है जो राहुल गांधी पचा नहीं पा रहे हैं। इस बार तो पी.एम. संयुक्त हाउस को भी सम्बोधित करेंगे। एक देश का प्रधान मंत्री मोदी जी के पाँव छूता है, दूसरे देश का प्रधान मंत्री उन्हें बाँस कहकर पुकारता है और यू.एस. प्रेसिडेंट उनका ऑटोग्राफ़ माँगता है। इन हालात में राहुल गांधी मोदी जी के पहुँचने से पहले उनकी निंदा करना, सरकारी संस्थाओं के खिलाफ़ बोलना, ताकि पूरे विश्व पर उसका असर पड़े परंतु दुर्भाग्य है राहुल गांधी का कि पूरा विश्व नमन करता है हमारे मोदी जी को। राहुल गांधी ने यू.एस. में प्रत्यक्ष रूप में और लंदन में परोक्ष रूप में अपना नकारात्मक एजेंडा चलाया परंतु सफल नहीं हुए ना होंगे। विडम्बना इस बात की है कि उनके अपनी विचारधारा वाले श्रीमान पित्रोदा जी कहते हैं कि देश के पी.एम. हर जगह सम्मान के हक्दार हैं। यह दो बातें एक दूसरे के विपरीत नहीं है क्या?

कांग्रेस को मंथन और चिंतन करना चाहिए कि देश सर्वोपरि है या एक व्यक्ति विशेष का निजी स्वार्थ।

विडम्बना इस बात की भी है कि राहुल गांधी ने 2004 से 2023 तक 19 साल में कोई ऐसा काम नहीं किया जिसको वो अपनी उपलब्धि मानकर विदेश में प्रचार कर सके। उनके पास नकारात्मकता के सिवा कुछ नहीं है। व्यक्ति की दुकान में जो होता है वो व्यक्ति वही सामान बेचता है। राहुल के पास मोदी विरोधी, भाजपा विरोधी, आर.एस.एस. विरोधी, हिंदुत्व विरोधी विचार धारा के सिवा कुछ नहीं है। इसलिये उनकी इस प्रकार की प्रवृत्ति बन गई है। जनता को मंथन करना चाहिए कि देश सर्वोपरि है या व्यक्ति विशेष का निजी स्वार्थ।

लेखक ने यह लेख विभाजन के दर्द से प्रेरित होकर निजी कपैसिटी में लिखा है क्योंकि हमारे बुजुर्गों ने विभाजन विभीषिका को सहा है। उन बुजुर्गों की आत्मा कभी भी अलगाववादियों की शक्तियों को माफ़ नहीं करेगी क्योंकि हमारे लिए राष्ट्र सर्वोपरि है।

हरियाणा की आवाज

भिवानी, चंडीगढ़, हिसार से एक साथ प्रकाशित

राष्ट्रवादी हिन्दी दैनिक

घर्ये : 14 अंक : 348

भिवानी मंगलवार 06 जून 2023

7:36 AM

कांग्रेस को मंथन और चिंतन करना चाहिए : बोधराज सीकरी

गुरुग्राम। हरियाणा सीएसआर ट्रस्ट के उपाध्यक्ष एवं पंजाबी बिरादरी महासंगठन के प्रधान बोधराज सीकरी ने राहुल गांधी के उस कथन को हास्यास्पद बताया है, जिसमें उन्होंने कहा है कि इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग सेक्युलर है। बोधराज सीकरी ने उनके कथन की निंदा करते हुए कहा कि जो संस्था जिन्ना की समर्थक है, जिस संस्था के कारण धर्म के आधार पर देश का विभाजन करवाया गया। जिस बंटवारे के कारण हजारों बहनें विधवा हुईं, हजारों बच्चे अनाथ हुए, हजारों महिलाओं की इज्जत लूटी गई। बुजुर्ग मारे गए। लोग बेघर हुए। अगर वह संस्था सेक्युलर है तो कम्यूनल कौन सी संस्था है। उन्होंने कहा कि हिंदुस्तान के टुकड़े होने का और पाकिस्तान का गठन होने का यदि कोई उत्तरदायी है तो यह संस्था ही है। सीकरी ने कहा कि दो वर्ष पूर्व हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने



विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस आयोजन करने का निर्णय लिया, ताकि हमारे बुजुर्गों के जख्मों पर मरहम लग सके। राहुल गांधी के इस गैर जिम्मेदाराना बयान से हमारे जख्मों को फिर से हरा कर दिया है। असफसोस इस बात का है कि इस संस्था ने कांग्रेस के साथ सौदेबाजी कर लाखों लोगों को दर-दर की ठोकरें खाने पर मजबूर किया। यह वो पार्टी है जो तीन तलाक के फैसले का पुरजोर विरोध करती है। फिर तो सिमी जैसी संस्था को भी राहुल गांधी को सेक्युलर घोषित करना चाहिए। बोधराज सीकरी ने कहा कि यूपीए की सरकार के दौरान एक बिल लाने का प्रयास किया गया था, जिसके अनुसार अगर दंगे होंगे तो हिंदू दोषी माना जाएगा और मुस्लिम विक्टिम माना जाएगा। अगर यह बिल लागू हो जाता तो दंगे होने के कारण हिंदू को जेल जाना पड़ता। शुक्र है कि वो बिल नहीं आया। यही कांग्रेस की असली मानसिकता है।

ओपन सर्च

सेक्युलर बनाम कम्यूनल की परिभाषा: बोध राज सीकरी

ओपन सर्च/ विशेष संवाददाता
सतवीर भारद्वाज

गुरुग्राम। राहुल गांधी का यह कहना कि इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग सेक्युलर है, एक हास्यास्पद बयान है क्योंकि अगर यह संस्था सेक्युलर है तो विश्व में कोई भी संस्था कम्यूनल नहीं है। जो संस्था जिन्ना की समर्थक है, जिस संस्था के कारण धर्म के आधार पर देश का विभाजन करवाया गया, जिस बँटवारे के कारण हजारों बच्चे अनाथ हुए, हजारों महिलाओं की इर्हा लुटी गई, हजारों हमारे युवा मारे गए, हजारों लोग बेघर हुए, अगर यह संस्था सेक्युलर है तो कम्यूनल कौन सी संस्था है।

हिंदुस्तान के टुकड़े होने का और पाकिस्तान का गठन होने का यदि कोई उत्तरदायी है तो यह संस्था ही है। दो वर्ष पूर्व हमारे प्रधान मंत्री ने विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस आयोजन करने का फ़ैसला लिया ताकि हमारे युवाओं के जख्मों पर महम लग सके परंतु राहुल गांधी के इस गैर जिम्मेदाराना बयान ने हमारे जख्मों को फिर से हरा कर

दिया है। अफ़सोस इस बात का

है कि इस संस्था ने कांग्रेस के साथ सौदेबाजी कर लाखों लोगों को दर-दर की ठोकरें खाने पर मजबूर किया। यह वो पार्टी है जो तीन तलाक़ के फ़ैसले का पुरजोर विरोध करती है। फिर तो सिम्मी जैसी संस्था को भी राहुल गांधी को सेक्युलर घोषित करना चाहिए। यह लिखते हुए दर्द महसूस हो रहा है कि जिस पार्टी के जुलूस में पाकिस्तान के नारे लगाए जाते हैं, जिनके जुलूस में पाकिस्तान के झंडे को खुलेआम सहारा जाता है, ऐसी ऑर्गनाइजेशन को सेक्युलर उहाराया जा रहा है। यह अलगवाववादियों का खेल नहीं तो क्या है। अचम्भा इस बात का है कि जब भी राहुल विदेश जाते हैं तो अचानक देश को मर्यादा की भूल जाते हैं। यह एक विडंबना है। सभी को मालूम ही होगा कि इस संस्था का कांग्रेस के साथ केरल में गठबंधन है जिसके कारण राहुल केरल से जीते थे और लगता है वो इस प्रकार की बयानबाजी करके अपना क़र्ज़ उतार रहे हैं। यू.पी.ए. की सरकार के दौरान एक विल लाने का प्रयास किया गया था जिसके अनुसार अगर दंगे होंगे तो हिंदू दोषी माना जाएगा और मुस्लिम विक्रम माना जाएगा। अगर

■ कांग्रेस को
मंथन और
चिंतन करना
वाहिए कि देश
सर्वोपरि है या
एक व्यक्ति
विशेष का निजी
स्वार्थ : बोधराज
सीकरी



यह विल लागू हो जाता तो दंगे होने के कारण हिंदू को जेल जाना पड़ता। शुक्र है कि वो विल नहीं आया। यही कांग्रेस की असली मानसिकता है। सर्वाधिक लोगों को मालूम है कि इस माह भारत के प्रधान मंत्री स्टेट विजिट पर यू.एस.ए. जा रहे हैं। वहाँ की सरकार आँखे बिछा कर प्रतीक्षा कर रही है जो राहुल गांधी पचा नहीं पा रहे हैं। इस बार तो पी.एम. संयुक्त हाउस को भी सम्बोधित करेंगे। एक देश का प्रधान मंत्री मोदी जी के पाँव चूला है, दूसरे देश का प्रधान मंत्री उन्हें बाँस कहकर पुकारता है और

यू.एस. प्रेसिडेंट उनका ऑटोग्राफ़ माँगता है। इन हालात में राहुल गांधी मोदी जी के पहुँचने से पहले उनकी निंदा करना, सरकारों संस्थाओं के खिलाफ़ बोलना, ताकि पूरे विश्व पर उसका असर पड़े परंतु दुर्भाग्य है राहुल गांधी का कि पूरा विश्व नमन करता है हमारे मोदी जी को। राहुल गांधी ने यू.एस. में प्रत्यक्ष रूप में और लंदन में परोक्ष रूप में अपना नकारात्मक एजेंडा चलाया परंतु सफल नहीं हुए ना होंगे। विडम्बना इस बात की है कि उनके अपनी विचारधारा वाले श्रीमान पित्रोला जी

कहते हैं कि देश के पी.एम. हर जगह सम्मान के हज़रदार हैं। यह दो बातें एक दूसरे के विपरीत नहीं है क्या?

कांग्रेस को मंथन और चिंतन करना चाहिए कि देश सर्वोपरि है या एक व्यक्ति विशेष का निजी स्वार्थ। विडम्बना इस बात की भी है कि राहुल गांधी ने 2004 से 2023 तक 19 साल में कोई ऐसा काम नहीं किया जिसको वो अपनी उपलब्धि मानकर विदेश में प्रचार कर सके। उनके पास नकारात्मकता के सिवा कुछ नहीं है व्यक्ति को दुकान में जो होता है वो व्यक्ति वही सामान बेचता है। राहुल के पास मोदी विरोधी, भाजपा विरोधी, आर.एस.एस. विरोधी, हिंदुत्व विरोधी विचार धारा के सिवा कुछ नहीं है। इसलिये उनकी इस प्रकार की प्रवृत्ति बन गई है।

जनता को मंथन करना चाहिए कि देश सर्वोपरि है या व्यक्ति विशेष का निजी स्वार्थ। लेखक ने यह लेख विभाजन के दर्द से प्रेरित होकर निजी कैपसिटी में लिखा है क्योंकि हमारे युवाओं ने विभाजन विभीषिका को सहारा है। उन युवाओं की आत्मा कभी भी अलगवाववादियों को शक्तिशाली को माफ़ नहीं करेगी क्योंकि हमारे लिए राष्ट्र सर्वोपरि है।

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

दृश्यमान इंडिया

हम बनेंगे आपकी आवाज

सेक्युलर बनाम कम्यूनल की परिभाषा : बोध राज सीकरी

दृश्यमान इंडिया/ब्यूरो

गुरुग्राम। राहुल गांधी का यह कहना कि इंडियन यूनिशन मुस्लिम लीग सेक्युलर है, एक हास्यास्पद बयान है क्योंकि अगर यह संस्था सेक्युलर है तो विश्व में कोई भी संस्था कम्यूनल नहीं है। जो संस्था जिन्ना को समर्थक है, जिस संस्था के कारण धर्म के आधार पर देश का विभाजन करवाया गया, जिस बंटवारे के कारण हजारों बहने विधवा हुईं, हजारों बच्चे अनाथ हुए, हजारों महिलाओं को इन्जुत लूटी गईं, हजारों हमारे बुजुर्ग मारे गए, हजारों लोग बेघर हुए, अगर वह संस्था सेक्युलर है तो कम्यूनल कौन सी संस्था है। हिंदुस्तान के टुकड़े होने का और पाकिस्तान का गठन होने का यदि कोई उत्तरदायी है तो यह संस्था ही है। दो वर्ष पूर्व हमारे प्रधान मंत्री ने विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस आयोजन करने का फ़ैसला लिया ताकि हमारे बुजुर्गों के ज़ख़्मों पर मरहम लग सके परंतु राहुल गांधी के इस ग़ैर जिम्मेदाराना बयान ने हमारे ज़ख़्मों को फिर से हराकर दिया है। अफ़सोस इस बात का है कि इस

● कांग्रेस को मंथन और चिंतन करना चाहिए कि देश सर्वोपरि है या एक व्यक्ति विशेष का निजी स्वार्थ : बोधराज सीकरी

संस्था ने कांग्रेस के साथ सौदेबाजी कर लाखों लोगों को दर-दर की टोकरी खाने पर मजबूर किया। यह जो पार्टी है जो तीन तलाक़ के फ़ैसले का पुरजोर विरोध करती है। फिर तो सिमी जैसी संस्था को भी राहुल गांधी को सेक्युलर घोषित करना चाहिए। यह लिखते हुए दर्द महसूस हो रहा है कि जिस पार्टी के जुलूस में पाकिस्तान के नारे लगाए जाते हैं, जिनके जुलूस में पाकिस्तान के झंडे को खुलेआम लहराया जाता है, ऐसी ऑर्गनाइजेशन को सेक्युलर उहराया जा रहा है। यह अलगाववादियों का खेल नहीं तो क्या है।

अबम्हा इस बात का है कि जब भी राहुल विदेश जाते हैं तो अचानक देश को मर्यादा को भूल जाते हैं। यह एक बिडंबना है। सभी को मालूम ही



होगा कि इस संस्था का कांग्रेस के साथ केरल में गठबंधन है जिसके कारण राहुल केरल से जीते थे और लगता है वो इस प्रकार की बयानबाजी करके अपना कर्ज़ो उतार रहे हैं। यू.पी.ए. की सरकार के दौरान एक बिल लाने का प्रयास किया गया था जिसके अनुसार अगर दंगे होंगे तो हिंदू दोषी माना जाएगा और मुस्लिम विबर्तित माना जाएगा। अगर यह बिल लागू हो जाता तो दंगे होने के कारण हिंदू को जेल जाना पड़ता। शक़ है कि वो बिल नहीं आया। यही कांग्रेस को असली मानसिकता है।

सर्वाधिक लोगों को मालूम है कि इस माह भारत के प्रधान मंत्री स्टेट विजिट पर यू.एस.ए. जा रहे हैं। वहाँ को सरकार आँखे बिछा कर प्रतीक्षा कर रही है जो राहुल गांधी पचा नहीं पा रहे हैं। इस बार तो पी.एम. संयुक्त हाउस को भी सम्बोधित करेंगे। एक देश का प्रधान मंत्री मोदी जी के पाँव छूता है, दूसरे देश का प्रधान मंत्री उन्हें बाँस कहकर पुकारता है और यू.एस. प्रेसिडेंट उनका ऑटोग्राफ़ माँगता है। इन हालात में राहुल गांधी मोदी जी के पहुँचने से पहले उनकी निंदा करना, सरकारी संस्थाओं के खिलाफ़ बोलना, ताकि पूरे विश्व पर उसका असर पड़े परंतु दुर्भाग्य है राहुल गांधी का कि पूरा विश्व नमन करता है हमारे मोदी जी को। राहुल गांधी ने यू.एस. में प्रत्यक्ष रूप में और लंदन में परोक्ष रूप में अपना नकारात्मक एजेंडा चलाया परंतु सफल नहीं हुए ना होंगे। बिडम्बना इस बात की है कि उनके अपनी विचारधारा वाले श्रीमान पित्रोदा जी कहते हैं कि देश के पी.एम. हर जगह सम्मान के हक़दार हैं। यह दो बातें एक दूसरे के विपरीत नहीं हैं क्या?

कांग्रेस को मंथन और चिंतन करना चाहिए कि देश सर्वोपरि है या एक व्यक्ति विशेष का निजी स्वार्थ।

बिडम्बना इस बात की भी है कि राहुल गांधी ने 2004 से 2023 तक 19 साल में कोई ऐसा काम नहीं किया जिसको वो अपनी उपलब्धि मानकर विदेश में प्रचार कर सके। उनके पास नकारात्मकता के सिवा कुछ नहीं है व्यक्ति की दुकान में जो होता है वो व्यक्ति वही सामान बेचता है। राहुल के पास मोदी विरोधी, भाजपा विरोधी, आर.एस.एस. विरोधी, हिंदुत्व विरोधी विचार धारा के सिवा कुछ नहीं है। इसलिये उनको इस प्रकार की प्रवृत्त बन गई है। जनता को मंथन करना चाहिए कि देश सर्वोपरि है या व्यक्ति विशेष का निजी स्वार्थ।

लेखक ने यह लेख विभाजन के दर्द से प्रेरित होकर निजी कर्पसिटी में लिखा है क्योंकि हमारे बुजुर्गों ने विभाजन विभीषिका को सहा है। उन बुजुर्गों की आत्मा कभी भी अलगाववादियों की शक्तियों को माफ़ नहीं करेगी क्योंकि हमारे लिए राष्ट्र सर्वोपरि है।

गुड़गांव टुडे

सेक्युलर बनाम कम्यूनल की परिभाषा

कांग्रेस को मंथन और चिंतन करना चाहिए कि देश सर्वोपरि है या एक व्यक्ति विशेष का निजी स्वार्थ : बोधराज सीकरी



बोधराज सीकरी

राहुल गांधी का यह कहना कि संविधान सुनिश्चित मुस्लिम लीग मेक्युलर है, एक ज़रूरतमंद जवाब है क्योंकि अगर यह संस्था मेक्युलर है तो विश्व में कोई भी संस्था कम्युनल नहीं है। जो संस्था बिना की धार्मिक है, बिना धर्म के कारण पार के आधार पर देश का विभाजन करवाया गया, बिना बदला के क़ारण लड़ाई फल विजय हुई, हज़ारों बच्चे अनाथ हुए, हज़ारों महिलाओं को इस्लाम सुनाई गई, हज़ारों हमारे बुढ़ों मारे गए, हज़ारों लोग बेकार हुए, अनाथ रह संस्था मेक्युलर है तो कम्युनल कौन सी संस्था है।

हिंदुस्तान के टुकड़े होने का और शाकितान का गठन होने का यह कोई ज़ाहमी है तो यह संस्था ही है।

दो वर्ष पूर्व इन्होंने प्रधानमंत्री ने विभाजन विभीषिका स्वीकृत किया आलोचन करने का फैसला किया था कि हमारे बुढ़ों के जख्मों पर महाम् लागू करें यह राहुल गांधी के इस दौर निम्नोदयान बनाने हमारे लक्ष्यों

को फिर से हवा कर दिया है। अक़बोस इस बात का है कि इस संस्था ने कांग्रेस के साथ सहिष्णुता कर लाने लोगों को दूर दूर को ठेकने खाने पर मजबूर किया। यह भी पार्टी है जो तो तत्काल के फ़ैसले का पुनर्गौर विरोध करती है। फिर तो किसी भी संस्था को भी राहुल गांधी को मेक्युलर घोषित करना चाहिए। यह लिखते हुए उन्हें महफूज हो रहा है कि बिना पार्टी के तुल्य में पालिशान के बारे में सोचें, बिल्कुल तुल्य में शाकितान के टुकड़े को खुलेआम सहारा देना है, ऐसी शर्मिन्दायन को संस्मृत ज़रूरत का रहा है। यह अलगवादीयों का खेल नहीं तो क्या है।

अचानक इस बात का है कि जब भी राहुल विरोध करते हैं तो अचानक देश की मीडिया को भूल जाते हैं। यह एक निश्चय है।

राणी को ग़लत ही टीका कि शा राधिका का कांग्रेस के साथ केवल में गठबंधन है जिसके कारण राहुल केवल में बंटेंगे थे और समाज है वो इस प्रकार को बचनबाज़ी करके अपना कर्त्तव्य उतार रहे हैं।

यू.पी.ए. की सरकार के दौरान एक विश्व स्तर का प्रवास किया गया था जिसके अन्तर्गत आगरा की हीरो तो हिंदू टोपी माना जाएगा और मुस्लिम

निश्चय माना जाएगा। अगर यह लिल ख़ाम हो जाता तो वही हमें के कारण हिंदू को जेल जाना पड़ता। शुरू है कि वो बिल नहीं आया। बहू कांग्रेस को ज़सती मान्यता है।

सबसे अधिक लोगों को मान्य है कि इस महा भारत के प्रधानमंत्री स्टेट विजिट पर यू.पी.ए. का रहे है। यहां की सरकार आगे विश्व कर प्रतीक्षा कर रही है जो राहुल गांधी मान नहीं पा रहे हैं। इस बार तो पी.एम. संकूल साउदा को भी सम्मिलित करेगा। एक देश का प्रधानमंत्री गोदी जी के पास होता है, दुनिया देश का प्रधानमंत्री उन्हें बांस बरकरा पुकारता है और यू.एस. प्रसिद्ध उनका अतिथि मानता है। उन हालात में राहुल गांधी मोदी जी के पहचान से पहले उनकी निता करना, साकार संस्थाओं के विनाशक मोहन, बाकि उसे निशान पर अक्षय अक्षर रहे परंतु दुर्भाग्य है राहुल गांधी का कि पूरा विश्व मान करता है लाने गोदी जी को। राहुल गांधी ने यू.ए.एस. में प्रत्यक्ष रूप में और लड़ा में परोक्ष रूप में अपना नकारात्मक प्रभाव बताया परंतु स्मरण नहीं हुए, जो शर्म। विश्वमना इस बात की है कि उनके अपनी विचारधारा वाले श्रीमान पिपीटा जी कहते हैं कि देश के पी.एम. हर एक सम्मान के हकदार है। यह दो नहीं एक

दुसरे के निर्भीत नहीं है क्या?

कांग्रेस को मंथन और चिंतन करना चाहिए कि देश सर्वोपरि है या एक व्यक्ति विशेष का निजी स्वार्थ।

विश्वमना इस बात को भी है कि राहुल गांधी ने 2024 से 2027 तक 19 साल में कोई ऐसा काम नहीं किया जिसको वो अपनी ज़रूरतों मानकर निर्देश में उतार कर सके। उनके पास नकारात्मकता के बिल्कुल कुछ नहीं है। व्यक्ति को दुश्मान में जो होता है वो व्यक्ति वही ग़ाज़न बनता है। राहुल के पास भीरी विरोधी भावना विरोधी, आर.एस.ए. विरोधी, हिंदुत्व विरोधी विचार धारा के सिवा कुछ नहीं है। इसलिये उनको इस प्रकार की प्रशंसा कर रहे हैं।

बनना नई मंथन करना चाहिए कि देश सर्वोपरि है या व्यक्ति विशेष का निजी स्वार्थ।

लेखक ने यह लेख विभाजन के पूर्व से प्रेरित शेखर निम्नो कर्त्तव्यों में लिखा है क्योंकि हमारे बुढ़ों ने विभाजन विभीषिका को मना है। उन बुढ़ों की आत्मा कभी भी अलगवादीयों की शक्तियों को माफ़ नहीं करेगी क्योंकि हमारे लिए राष्ट्र सर्वोपरि है।।

नये भारत का अखबार



गुड़गांव मेल

DAVP, Northern Rly., DIPR Haryana के विद्यार्थियों के लिए अतिरिक्त हरियाणा के सभी जिलों, चण्डीगढ़ और दिल्ली में प्रसारित

सेक्युलर बनाम कम्यूनल की परिभाषा : बोध राज सीकरी

कांग्रेस को मंथन और चिंतन करना चाहिए कि देश सर्वोपरि है या एक व्यक्ति विशेष का निजी स्वार्थ

स्यूरी/अनुपम मेन
गुड़गांव, 5 जून। राहुल गांधी का यह कहना कि जैलिंग सुनिश्च मुस्लिम लीग सेक्युलर है, एक इरररान्सफ कथान है क्योंकि अगर यह मंथन सेक्युलर है तो विश्व में कोई भी संस्था कम्यूनल नहीं है। जो मंथन जिन्या करे सक्कत है, जिस मंथन के कारण मरने के आगरा उस देश का विभाजन करवाए गए, जिन बेटवों के कारण इमारी बहनो विधवा हुं, इकरीं बन्ने अनाथ हुए, इबरीं मारकरबनी बनी इपुजव सुटे गई, इकरीं इमारे खुदुने मारे गए, इबरीं लोग बेघर हुए, अगर यह मंथन सेक्युलर है तो कम्यूनल कौन से

रास्ता है।
हिंदुस्तान के टुकड़े होने का और पाकिस्तान का गठन होने का यदि कोई इतरकथान है तो यह मंथन ही है। जो बने खुद इमारे प्रधान मंत्री ने विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस आयोजन करने का फैसला किया ताकि हमारे बुद्धों के जन्में पर महत्त्व रखा जाके परंतु राहुल गांधी के द्वारा भी जैंगोद्वारा बयान है हमारे अरुमें यो दिन से रहा बर कि है। आस्वीया ट्रा बर का है कि ट्रा संस्था ने कांग्रेस के साथ सहियोगी का लगी लीग को दा-दा की टिकने खाने पर मजबूर किया। यह तो फटी है जो तीन तालक के फेंसने का

मुजोता विरोध करती है। फिर तो किसी जैसी संस्था को भी राहुल गांधी को सेक्युलर घोषित करना चाहिए। यह लिखते हुए पर महत्त्व तो रखा है कि जिस पार्टी के जुलूस में पाकिस्तान के नरे लगाए, बसे हैं, जिनके जुलूस में पाकिस्तान के झंडे को जुलेझाम लहराया जाता है, ऐसी अर्धिनारकेशन को सेक्युलर उहउरना जा रहा है। गद शहाबाबबिथीं का खेल नहीं तो क्या है।
शमशा ट्रा बात का है कि जब भी राहुल बिदेर जाती है तो अल्पसंख्ये को मजबूत की मूल बात है। यह एक विरथन है।
सभी को मान्यता होना चाहिए इस



राधा का कोठी के साथ केवल में गठबंधन है जिसके कारण राहुल केवल में जाते थे और लगता है वो इस प्रकार की बयानबानी करके अपना कुर्या उधार कर रहे हैं।

यू.पी.ए. को शास्त्र के दौरान एक कित रागे का प्रश्नन किया गया था जिसके अनुसार अगर दंगे होने तो हिंदू दोषी मान जाएगा और मुस्लिम जिंजीम माना जाएगा। अगर यह खिल लाना हो जाता तो देश के न्याय हिंदू को जेत जान पड़ता। शुक है कि वो खिल नहीं आया। वही न्याय को उसकी मानसिकता है।
राबोधिक लोगों को गाली दे कि इस तरह भारत के प्रधान मंत्री संदे विबदि पर यू.पी.ए. का रहे है। बनीं यो सरकार अंशे निरुधर उर उरिंश कर रही है जो राहुल गांधी पचा नहीं था नहीं है। इस बात तो भी उम-न्येकल हालस को भी सन्बोधित करीं। पक

देश का प्रश्नन गांधी गांधी को के पांव खुला है, इमारे देश का प्रश्नन मंत्री उन्हें बर्ष करकर पुकारता है और यू.पी.ए. रोमिंसेट लम्का अंटीकलु मंथन है। इन हालत में राहुल गांधी मोदी जी के पहुँचने से पहले उनकी निंद करन, सरकारी संस्थाओं के खिलाफ बोलना, तकि पूरे विश्व पर उसका असर पड़े परंतु दुर्भाग्य है राहुल गांधी का कि पूरा विश्व जान करत है इमारे मोदी जी को राहुल गांधी ने यू.पी.ए. में प्रत्यक्ष रूप में और संदेन में परोस रूप में अपना चक्रादारम एजेका चलवा परंतु सफल नहीं हुए न होगी। बिदमन्वः इस बात की है कि उनके अपनी विचारधारा चलने

श्रीमान विरोध जो कहते हैं कि देश के पी.एम. हर जगह सम्मान के इकृदार हैं। यह दो बातें एक दूसरे के विरोधी नहीं हैं क्या ?
कांग्रेस को मंथन और चिंतन करना चाहिए कि देश सर्वोपरि है या एक व्यक्ति विशेष का निजी स्वार्थ।
बिदमन्वः इस बात को भी है कि राहुल गांधी ने 2004 से 2013 तक 10 साल में कोई ऐसा काम नहीं किया जिसको वो अपनी उरहसंधी मानकर बिदेश में प्रसार कर सके। उनके पास जनराजमन्वः के सिवा कुछ नहीं है। व्यक्ति को तुलना में जो होता है वो व्यक्ति यही मान्य विरथन है। राहुल के पास मोदी विरोधी

गांधवा विरोधी, आर.एन.ए.ए. विरोधी, हिंदुत्व विरोधी विचार धारा के सिवा कुछ नहीं है। इन्निच उनको इस प्रकार की प्रवृति बन गई है।
जानता को मंथन करना चाहिए कि देश सर्वोपरि है या व्यक्ति विशेष का निजी स्वार्थ।
सेखक ने यह लेख लिखने के दूर से प्रेरित होकर निजी कर्षीगो में लिखा है क्योंकि इमारे बुद्धों ने विभाजन विभीषिका को कहा है। उन बुद्धों को आगरा बर्षों में अरगाबबबिथीं को शकियों को सफु नहीं करेगे क्योंकि इमारे लिए, राहुल सर्वोपरि है।

दैनिक
राष्ट्रीय हिंदी समाचार पत्र
उजाला आज तक

'कांग्रेस को मंथन और चिंतन करना चाहिए कि देश सर्वोपरि है या एक व्यक्ति विशेष का निजी स्वार्थ'

पुलवामा हमला... दिल्ली में कांग्रेस के नेताओं के बीच मतभेद...

दिल्ली में कांग्रेस के नेताओं के बीच मतभेद... अहमद खान ने कहा...

अहमद खान ने कहा... भारत में लोकतंत्र की रक्षा...



भारत में लोकतंत्र की रक्षा... देश की अखंडता...

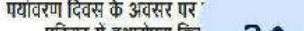
देश की अखंडता... लोकतंत्र की रक्षा...

लोकतंत्र की रक्षा... देश की अखंडता...

उपमुख्यमंत्री दुष्यंत चौटाला ने जताया शोक

पर्यावरण संरक्षण विभाग भाजपा ने हरियाणा

डीएम अरविन्द कुमार वर्मा द्वारा...



रण टाइम्स

सेक्युलर बनाम कम्यूनल की परिभाषा - बोध राज सीकरी

■ कांग्रेस को मंथन और चिंतन करना चाहिए कि देश सर्वोपरि है या एक व्यक्ति विशेष का निजी स्वार्थ: बोधराज सीकरी

राजू गुप्ता

गुरुग्राम, (रण टाइम्स)।

राहुल गांधी का यह कहना कि इंडियन यूनिवर्सल मुस्लिम लीग सेक्युलर है, एक हस्त्यासद बयान है क्योंकि अगर यह संस्था सेक्युलर है तो विश्व में कोई भी संस्था कम्यूनल नहीं है। जो संस्था जिद्द की समर्थक है, जिस संस्था के कारण धर्म के आधार पर देश का विभाजन करवाया गया, जिस बँटवारे के कारण हज़ारों बहने विधवा हुईं, हज़ारों बच्चे अनाथ हुए, हज़ारों महिलाओं की इज्जत सूटी गई, हज़ारों हमारे बुजुर्ग मारे गए, हज़ारों लोग बेघर हुए, अगर यह संस्था सेक्युलर है तो कम्यूनल कौन सी संस्था है।

हिंदुस्तान के टुकड़े होने का और पाकिस्तान का गठन होने का यदि कोई उत्तरदायी है तो यह संस्था ही है।

दो वर्ष पूर्व हमारे प्रधान मंत्री ने विभाजन विभाषिका समृति दिवस आयोजन करने का फैसला लिया



ताकि हमारे बुजुर्गों के जख्मों पर मरहम लग सके परंतु राहुल गांधी के इस गौर जिम्मेदाराना बयान ने हमारे जख्मों को फिर से हथ कर

दिया है। अफ़सोस इस बात का है कि इस संस्था ने कांग्रेस के साथ सौदेबाजी कर लाखों लोगों को दर-दर की ठोकरें खाने पर मजबूर किया। यह वो पार्टी है जो तीन तलाक के फैसले का पुरजोर विरोध करती है। फिर तो सिमी जैसी संस्था को भी

राहुल गांधी को सेक्युलर घोषित करना चाहिए। यह लिखते हुए दर्द महसूस हो रहा है कि जिस पार्टी के जुनुस में पाकिस्तान के नरि लगाए जाते हैं, जिनके जुनुस में पाकिस्तान के झंडे को खुलेआम लहराया जाता है, ऐसी ऑर्गेनाइज़ेशन को सेक्युलर ठहराया जा रहा है। यह अलगाववादियों का खेल नहीं तो क्या है।

अचम्भा इस बात का है कि जब भी राहुल विदेश जाते हैं तो अचानक देश को मर्यादा को भूल जाते हैं। यह एक विडंबना है।

सभी को मालूम ही होगा कि इस संस्था का कांग्रेस के साथ केरल में गठबंधन है जिसके कारण राहुल केरल से जीते थे और लगता है वो इस प्रकार की बयानबाजी करके अपना कर्जा उतार रहे हैं।

यू.पी.ए. की सरकार के दौरान एक बिल लाने का प्रयास किया गया

था जिसके अनुसार अगर दंगे होंगे तो हिंदू दोषी माना जाएगा और मुस्लिम विक्रम माना जाएगा। अगर यह बिल लागू हो जाता तो दंगे होने के कारण हिंदू को जेल जाना पड़ता। शुक्र है कि वो बिल नहीं आया। यही कांग्रेस की असली मानसिकता है।

सर्वाधिक लोगों को मालूम है कि इस माह भारत के प्रधान मंत्री स्टेट विजिट पर यू.एस.ए. जा रहे हैं। वहीं की सरकार अखिे विडवा कर प्रतीक्षा कर रही है जो राहुल गांधी पचा नहीं पा रहे हैं। इस बार तो पी.एम. संयुक्त हाउस को भी सम्बोधित करेंगे। एक देश का प्रधान मंत्री मोदी जी के पीछे छूटा है, दूसरे देश का प्रधान मंत्री उन्हें बॉस कहकर पुकारता है और यू.एस. प्रेसिडेंट उनका ऑटोग्राफ माँगता है। इन हालात में राहुल गांधी मोदी जी के पहुँचने से पहले उनकी निंदा करना, सरकारी संस्थाओं के खस्ताफ बोलेना, ताकि पूरे विश्व पर उसका

असर बड़े परंतु दुर्भाग्य है राहुल गांधी का कि पूरा विश्व नमन करता है हमारे मोदी जी को। राहुल गांधी ने यू.एस. में प्रत्यक्ष रूप में और लंदन में परोक्ष रूप में अपना नकारात्मक एजेंडा चलाया परंतु सफल नहीं हुए ना होंगे। विडम्बना इस बात की है कि उनके अपनी विचारधारा वाले श्रीमान पित्रोदा जी कहते हैं कि देश के पी.एम. हर जगह सम्मान के हकदार हैं। यह दो बातें एक दूसरे के विपरीत नहीं है क्या?

कांग्रेस को मंथन और चिंतन करना चाहिए कि देश सर्वोपरि है या एक व्यक्ति विशेष का निजी स्वार्थ। विडम्बना इस बात की भी है कि राहुल गांधी ने 2004 से 2023 तक 19 साल में कोई ऐसा काम नहीं किया जिसको वो अपनी उपलब्धि मानकर विदेश में प्रचार कर सके। उनके पास नकारात्मकता के सिवा कुछ नहीं है।



राहुल गांधी का बयान हास्यास्पद : बोधराज सीकरी

गुरुग्राम/अरोड़ा : इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग को राहुल गांधी द्वारा सेक्युलर बताना एक हास्यास्पद बयान है। क्योंकि इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग ने देश का धर्म



के आधार पर विभाजन कराया था। विभाजन के कारण हजारों बहने विधवा हुई, हजारों बच्चे अनाथ हुए, हजारों महिलाओं की इज्जत लूटी गई, हजारों बुजुर्ग मारे गए, हजारों लोग बेघर हुए। उक्त बात पंजाबी बिरादरी महासंगठन के

अध्यक्ष व सीएसआर ट्रस्ट के उपाध्यक्ष बोधराज सीकरी ने कही। उन्होंने कहा कि यदि इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग सेक्युलर है तो फिर कम्युनल कौन सी संस्था है। देश के विभाजन और पाकिस्तान का गठन होने की जिम्मेदारी यही संस्था है। उन्होंने कहा कि करीब 2 वर्ष पूर्व प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस आयोजन करने का निर्णय लिया ताकि विभाजन का दंश झेलने वालों के जख्मों पर मरहम लग सके। लेकिन राहुल गांधी ने ऐसा गैर जिम्मेदाराना बयान देकर उनके जख्मों को फिर से हरा कर दिया है।

कांग्रेस को मंथन और चिंतन करना चाहिए कि देश सर्वोपरि है या एक व्यक्ति विशेष का निजी स्वार्थ : बोधराज सीकरी



सेक्युलर बनाम कम्यूनल की परिभाषा - बोधराज सीकरी

गुरुग्राम (एनसीआर टाइम) राहुल गांधी का यह कहना कि इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग सेक्युलर है, एक हास्यास्पद बयान है क्योंकि अगर यह संस्था सेक्युलर है

तो विश्व में कोई भी संस्था कम्यूनल नहीं है। जो संस्था जिन्ना की समर्थक है, जिस संस्था के कारण धर्म के आधार पर देश का विभाजन करवाया गया, जिस बँटवारे के कारण हजारों बहने विधवा हुई, हजारों बच्चे अनाथ हुए, हजारों महिलाओं की इज्जत लूटी गई, हजारों हमारे बुजुर्ग मारे गए, हजारों लोग बेघर हुए, अगर वह संस्था सेक्युलर है तो कम्यूनल कौन सी संस्था है। हिंदुस्तान के टुकड़े होने का और पाकिस्तान का गठन होने का यदि कोई उत्तरदायी है तो यह संस्था ही है। दो वर्ष पूर्व हमारे प्रधान मंत्री ने विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस आयोजन करने का फैसला लिया ताकि हमारे बुजुर्गों के जख्मों पर मरहम लग सके परंतु राहुल गांधी के इस गैर जिम्मेदाराना बयान ने हमारे जख्मों को फिर से हरा कर दिया है। अफसोस इस बात का है कि इस संस्था ने कांग्रेस के साथ सौदेबाजी कर लाखों लोगों को दर-दर की ठोकरें खाने पर मजबूर किया। यह वो पार्टी है जो तीन तलाक के फैसले का पुरजोर विरोध करती है। फिर तो सिमी जैसी संस्था को भी राहुल गांधी को सेक्युलर घोषित करना चाहिए। यह लिखते हुए दर्द महसूस हो रहा है कि जिस पार्टी के जुलूस में पाकिस्तान के नारे लगाए जाते हैं, जिनके जुलूस में पाकिस्तान के झंडे को खुलेआम लहराया जाता है, ऐसी ऑर्गनाइजेशन को सेक्युलर ठहराया जा रहा है। यह अलगाववादियों का खेल नहीं तो क्या है।

अचम्भा इस बात का है कि जब भी राहुल विदेश जाते हैं तो अचानक देश की मर्यादा को भूल जाते हैं। यह एक विडंबना है। सभी को मालूम ही होगा कि इस संस्था का कांग्रेस के साथ केरल में गठबंधन है जिसके कारण राहुल केरल से जीते थे और लगता है वो इस प्रकार की बयानबाजी करके अपना कर्जा उतार रहे हैं। यू.पी.ए. की

सरकार के दौरान एक बिल लाने का प्रयास किया गया था जिसके अनुसार अगर दंगे होंगे तो हिंदू दोषी माना जाएगा और मुस्लिम विक्रिम माना जाएगा। अगर यह बिल लागू हो जाता तो दंगे होने के कारण हिंदू को जेल जाना पड़ता। शुक्र है कि वो बिल नहीं आया। यही कांग्रेस की असली मानसिकता है। सर्वाधिक लोगों को मालूम है कि इस माह भारत के प्रधान मंत्री स्टेट विजिट पर यू.एस.ए. जा रहे हैं। वहाँ की सरकार आँखे बिछा कर प्रतीक्षा कर रही है जो राहुल गांधी पचा नहीं पा रहे हैं। इस बार तो पी. एम. संयुक्त हाउस को भी सम्बोधित करेंगे। एक देश का प्रधान मंत्री मोदी जी के पाँव छूता है, दूसरे देश का प्रधान मंत्री उन्हें बाँस कहकर पुकारता है और यू.एस. प्रेसिडेंट उनका ऑटोग्राफ माँगता है।

इन हालात में राहुल गांधी मोदी जी के पहुँचने से पहले उनकी निंदा करना, सरकारी संस्थाओं के खिलाफ बोलना, ताकि पूरे विश्व पर उसका असर पड़े परंतु दुर्भाग्य है राहुल गांधी का कि पूरा विश्व नमन करता है हमारे मोदी जी को। राहुल गांधी ने यू.एस. में प्रत्यक्ष रूप में और लंदन में परोक्ष रूप में अपना नकारात्मक एजेंडा चलाया परंतु सफल नहीं हुए ना होंगे। विडम्बना इस बात की है कि उनके अपनी विचारधारा वाले श्रीमान पित्रोदा जी कहते हैं कि देश के पी.एम. हर जगह सम्मान के हकदार हैं। यह दो बातें एक दूसरे के विपरीत नहीं है क्या? कांग्रेस को मंथन और चिंतन करना चाहिए कि देश सर्वोपरि है या एक व्यक्ति विशेष का निजी स्वार्थ।

विडम्बना इस बात की भी है कि राहुल गांधी ने 2004 से 2023 तक 19 साल में कोई ऐसा काम नहीं किया जिसको वो अपनी उपलब्धि मानकर विदेश में प्रचार कर सके। उनके पास नकारात्मकता के सिवा कुछ नहीं है। व्यक्ति की दुकान में जो होता है वो व्यक्ति वही सामान बेचता है। राहुल के पास मोदी विरोधी, भाजपा विरोधी, आर.एस.एस. विरोधी, हिंदुत्व विरोधी विचार धारा के सिवा कुछ नहीं है। इसलिय उनकी इस प्रकार की प्रवृत्ति बन गई है। जनता को मंथन करना चाहिए कि देश सर्वोपरि है या व्यक्ति विशेष का निजी स्वार्थ। लेखक ने यह लेख विभाजन के दर्द से प्रेरित होकर निजी कपैसिटी में लिखा है क्योंकि हमारे बुजुर्गों ने विभाजन विभीषिका को सहा है। उन बुजुर्गों की आत्मा कभी भी अलगाववादियों की शक्तियों को माफ नहीं करेगी क्योंकि हमारे लिए राष्ट्र सर्वोपरि है ।।

कांग्रेस को मंथन और चिंतन करना चाहिए : बोधराज सीकरी

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

हरियाणा सीएसआर ट्रस्ट के उपाध्यक्ष एवं पंजाबी बिरादरी महासंगठन के प्रधान बोधराज सीकरी ने राहुल गांधी के उस कथन को हास्यास्पद बताया है, जिसमें उन्होंने कहा है कि इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग सेक्युलर है। बोधराज सीकरी ने उनके कथन की निंदा करते हुए कहा कि जो संस्था जिन्ना की समर्थक है, जिस संस्था के कारण धर्म के आधार पर देश का विभाजन करवाया गया। जिस बंटवारे के कारण हजारों बहनें विधवा हुईं, हजारों बच्चे अनाथ हुए, हजारों महिलाओं की इज्जत लूटी गई। बुजुर्ग मारे गए। लोग बेघर हुए।

अगर वह संस्था सेक्युलर है तो कम्यूनल कौन सी संस्था है। उन्होंने कहा कि हिंदुस्तान के टुकड़े होने का और पाकिस्तान का गठन होने का यदि कोई उत्तरदायी है तो यह संस्था ही है। सीकरी ने कहा कि दो वर्ष पूर्व हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस आयोजन करने का निर्णय लिया, ताकि हमारे बुजुर्गों के जख्मों पर मरहम लग सके। राहुल गांधी के



बोधराज सीकरी।

इस गैर जिम्मेदाराना बयान से हमारे जख्मों को फिर से हरा कर दिया है। अफसोस इस बात का है कि इस संस्था ने कांग्रेस के साथ सौदेबाजी कर लाखों लोगों को दर-दर की ठोकरें खाने पर मजबूर किया। यह वो पार्टी है जो तीन तलाक के फैसले का पुरजोर विरोध करती है। फिर तो सिमी जैसी संस्था को भी राहुल गांधी को सेक्युलर घोषित करना चाहिए। बोधराज सीकरी ने कहा कि यूपीए की सरकार के दौरान एक बिल लाने का प्रयास किया गया था, जिसके अनुसार अगर दंगे होंगे तो हिंदू दोषी माना जाएगा और मुस्लिम विक्टिम माना जाएगा। अगर यह बिल लागू हो जाता तो दंगे होने के कारण हिंदू को जेल जाना पड़ता। शुक्र है कि वो बिल नहीं आया। यही कांग्रेस की असली मानसिकता है।

Bharat Sarathi

A Complete News Website

कांग्रेस को मंथन और चिंतन करना चाहिए कि देश सर्वोपरि है या एक व्यक्ति विशेष का निजी स्वार्थ : बोधराज सीकरी

गुरुग्राम, 05 जून। राहुल गांधी का यह कहना कि इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग सेक्युलर है, एक हास्यास्पद बयान है क्योंकि अगर यह संस्था सेक्युलर है तो विश्व में कोई भी संस्था कम्यूनल नहीं है। जो संस्था जिन्ना की समर्थक है, जिस संस्था के कारण धर्म के आधार पर देश का विभाजन करवाया गया, जिस बंटवारे के कारण हज़ारों बहने विधवा हुईं, हज़ारों बच्चे अनाथ हुए, हज़ारों महिलाओं की इज़्जत लूटी गई, हज़ारों हमारे बुजुर्ग मारे गए, हज़ारों लोग बेघर हुए, अगर वह संस्था सेक्युलर है तो कम्यूनल कौन सी संस्था है।

हिंदुस्तान के टुकड़े होने का और पाकिस्तान का गठन होने का यदि कोई उत्तरदायी है तो यह संस्था ही है।



दो वर्ष पूर्व हमारे प्रधान मंत्री ने विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस आयोजन करने का फैसला लिया ताकि हमारे बुजुर्गों के ज़रुमों पर मरहम लग सके परंतु राहुल गांधी के इस और ज़िम्मेदाराना बयान ने हमारे ज़रुमों को फिर से दरा कर दिया है। अफ़सोस इस बात का है कि इस संस्था ने कांग्रेस के साथ सौदेबाज़ी कर लाखों लोगों को दर-दर की ठोकरें खाने पर मजबूर किया। यह वो पार्टी है जो तीन तलाक के फैसले का पुरज़ोर विरोध करती है। फिर तो सिमी जैसी संस्था को भी राहुल गांधी को सेक्युलर घोषित करना चाहिए। यह लिखते हुए दर्द महसूस हो रहा है कि जिस पार्टी के जुलूम में पाकिस्तान के बारे लगाए जाते हैं, जिनके जुलूम में पाकिस्तान के झंडे को खुलेआम लहराया जाता है, ऐसी ऑर्गनाइज़ेशन को सेक्युलर ठहराया जा रहा है। यह अलगाववादियों का खेल नहीं तो क्या है।

अचम्भा इस बात का है कि जब भी राहुल विदेश जाते हैं तो अचानक देश की मर्यादा को भूल जाते हैं। यह एक विडंबना है।

सभी को मालूम ही होगा कि इस संस्था का कांग्रेस के साथ केरल में गठबंधन है जिसके कारण राहुल केरल से जीते थे और लगता है वो इस प्रकार की बयानबाज़ी करके अपना कर्ज़ा उतार रहे हैं।



POLITICS

Bodhraj Sikri – कांग्रेस को मंथन करना चाहिए कि देश सर्वोपरि है या एक व्यक्ति विशेष



VIRAL SACH

June 5, 2023

No Comments

1



4 minute read

Viral Sach : Bodhraj Sikri – राहुल गांधी का यह कहना कि इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग सेक्युलर है। एक हास्यास्पद बयान है क्योंकि अगर यह संस्था सेक्युलर है तो विश्व में कोई भी संस्था कम्यूनल नहीं है।

जो संस्था जिन्ना की समर्थक है, जिस संस्था के कारण धर्म के आधार पर देश का विभाजन करवाया गया, जिस बँटवारे के कारण हज़ारों बहने विधवा हुईं, हज़ारों बच्चे अनाथ हुए, हज़ारों महिलाओं की इज्जत तूटी गई, हज़ारों हमारे बुजुर्ग मारे गए, हज़ारों लोग बेघर हुए, अगर वह संस्था सेक्युलर है तो कम्यूनल कौन सी संस्था है।

हिंदुस्तान के टुकड़े होने का और पाकिस्तान का गठन होने का यदि कोई उत्तरदायी है तो यह संस्था ही है। दो वर्ष पूर्व हमारे प्रधान मंत्री ने विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस आयोजन करने का फैसला लिया ताकि हमारे बुजुर्गों के ज़ख्मों पर मरहम तग सके।

परंतु राहुल गांधी के इस गैर जिम्मेदाराना बयान ने हमारे ज़ख्मों को फिर से हरा कर दिया है। अफसोस इस बात का है कि इस संस्था ने कांग्रेस के साथ सीदेबाज़ी कर ताखों लोगों को दर-दर की ठोकरें खाने पर मजबूर किया।

यह वो पार्टी है जो तीन तलाक के फैसले का पुरजोर विरोध करती है। फिर तो सिमी जैसी संस्था को भी राहुल गांधी को सेक्युलर घोषित करना चाहिए। यह लिखते हुए दर्द महसूस हो रहा है कि जिस पार्टी के जुत्स में पाकिस्तान के नारे लगाए जाते हैं, जिनके जुत्स में पाकिस्तान के झंडे की खुलेआम तहराया जाता है, ऐसी ऑर्गनाइजेशन को सेक्युलर ठहराया जा रहा है। यह अतगाववादियों का खेल नहीं तो क्या है।

एक देश का प्रधान मंत्री मोदी जी के पॉव छूता है, दूसरे देश का प्रधान मंत्री उन्हें बॉस कहकर पुकारता है और यू.एस. प्रेसिडेंट उनका ऑटोग्राफ माँगता है। इन हालात में राहुल गांधी मोदी जी के पहुँचने से पहले उनकी निंदा करना, सरकारी संस्थाओं के खिलाफ बोलना, ताकि पूरे विश्व पर उसका असर पड़े परंतु दुर्भाग्य है राहुल गांधी का कि पूरा विश्व नमन करता है हमारे मोदी जी को।

राहुल गांधी ने यू.एस. में प्रत्यक्ष रूप में और लंदन में परोक्ष रूप में अपना नकारात्मक एजेंडा चलाया परंतु सफल नहीं हुए ना होंगे। विडम्बना इस बात की है कि उनके अपनी विचारधारा वाले श्रीमान पित्रोदा जी कहते हैं कि देश के पी.एम. हर जगह सम्मान के हकदार हैं। यह दो बातें एक दूसरे के विपरीत नहीं है क्या?

कांग्रेस को मंथन और चिंतन करना चाहिए कि देश सर्वोपरि है या एक व्यक्ति विशेष का निजी स्वार्थ।

विडम्बना इस बात की भी है कि राहुल गांधी ने 2004 से 2023 तक 19 साल में कोई ऐसा काम नहीं किया जिसको वो अपनी उपलब्धि मानकर विदेश में प्रचार कर सके। उनके पास नकारात्मकता के सिवा कुछ नहीं है। व्यक्ति की दुकान में जो होता है वो व्यक्ति वही सामान बेचता है।

राहुल के पास मोदी विरोधी, भाजपा विरोधी, आर.एस.एस. विरोधी, हिंदुत्व विरोधी विचार धारा के सिवा कुछ नहीं है। इसलिय उनकी इस प्रकार की प्रवृत्ति बन गई है।

जनता को मंथन करना चाहिए कि देश सर्वोपरि है या व्यक्ति विशेष का निजी स्वार्थ।